नन्ही मछली की सतरंगी छतरी

डॉ. मधु पंत

स्पर्श
Sparshmani
मणि

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

ISBN : 978-81-906764-4-1

नन्ही मछली की सतरंगी छतरी

लेखक :
डॉ. मधु पंत

प्रकाशक :
स्पर्शमणि
104 पॉकेट–ए, माउन्ट कैलाश,
ईस्ट ऑफ कैलाश,
नई दिल्ली – 110065
मो. नं. 9958077550

संस्करण :
सन् 2011

चित्रांकन
मास्टर मनीष कुमार

रूपांकन
श्रीमती सरस्वती

मूल्य : 95/–

नन्ही मछली की सतरंगी छतरी

बच्चों से.....

नन्हे साथियो,

एक बार एक अजीब–सी बात हुई। एक नन्ही मछली मचल गई यह कह कर कि उसे एक सतरंगी छतरी चाहिए।..... पानी में रहने वाली मछली का भला छतरी से क्या सरोकार? है ना हैरानी वाली बात ?..... तभी तो नन्ही मछली की माँ भी चक्कर में पड़ गई। पर जब नन्ही मछली ने उस सतरंगी छतरी के एक–एक कर के सात फ़ायदे बता दिए तो उसकी माँ सचमुच में खुश हो गई और उसने तुरंत अपनी नन्ही–मुन्नी की बात मान ली। हाँ भई उसने अपनी नन्ही से सतरंगी छतरी लाने का पक्का वायदा कर दिया।

तुम्हें भी यह जानने की बेचैनी हो रही होगी कि नन्ही मछली को सतंरगी छतरी क्यों चाहिए थी?... तो देर क्या है? झटपट पढ़ डालो पुस्तक "नन्ही मछली की सतरंगी छतरी", जो विशेष रूप से तुम्हारे लिए ही लिखी गई है। इतना ही नहीं, पुस्तक का चित्रांकन भी एक बच्चे ने किया है... ख़ास तुम्हारे लिए।

– मधु पंत

आभार

पुस्तक "नन्ही मछली की सतरंगी छतरी" को लिखने की प्रेरणा बच्चे ही हैं जो अपनी प्रखर कल्पना शक्ति के कारण हमेशा एक चुनौती देते हैं और कुछ नया सोचने व करने को प्रेरित करते हैं। अभिनव सोच वाले उन सभी बच्चों का हृदय से आभार।

पुस्तक की निर्माण प्रक्रिया में चित्रांकन भी बच्चों ने ही किया। यह कार्य एक कार्यशाला के रूप में हुआ जिसे राष्ट्रीय बाल भवन के प्रकाशन अनुभाग में आयोजित किया गया। राष्ट्रीय बाल भवन तथा प्रकाशन विभाग के सहकर्मियों का हार्दिक धन्यवाद।

सबसे अधिक आभार है नन्हे कलाकारों का जिन्होंने न केवल चित्र बनाए बल्कि मेरी कल्पना को साकार करने में अपना अपरिमित योगदान दिया।

?
1

नन्ही मछली बोली, "अम्मा!
छतरी मुझे दिला दो ना।
रंग–बिरंगी सात रंगों की,
छाता झटपट ला दो ना।"

चकराई मछली की अम्मा,
"जल में क्या छतरी का काम?
पानी में जो रहता हरदम,
पानी ही हो जिसका धाम।"

"सतरंगी उस छतरी से मैं,
सात काम कर पाऊँगी।
एक–एक करके वे सातों,
अम्मा, तुम्हें गिनाऊँगी।"

नन्ही मछली उछली, बोली,
"इन्द्रधनुष जब भी आता।
अपने सातों रंगों के संग,
मुझे चिढ़ा, खुद इतराता।"

"उसकी ऐसी की तैसी कर,
मैं ख़ुश हो, मुस्काऊँगी।
इन्द्रधनुष के वे सातों रंग
छतरी में सिमटाऊँगी।"

"जब भी भारी–भरकम मछली,
मुझे निगलने आएगी।
सतरंगी छतरी को लख कर,
तुरत भाग वह जाएगी।"

"तेज़ धूप में बाहर आ कर,
लेना साँस कठिन होता।
गाड़ूँगी छतरी को तट पर,
और लगाऊँगी गोता।"

"अपनी सखी सहेली को मैं,
सात रंग दिखलाऊँगी।
फिर छतरी को चक्कर देकर,
उन सबको भरमाऊँगी।"

"सातों रंग के बदले में जब,
वे देखेंगीं रंग सफ़ेद।
सोचेंगी मुझको जादूगर,
जान न पाएँ, असली भेद।"

"दादी–नानी से छिपकर मैं,
छतरी में छिप जाऊँगी।
ढूँढ–ढूँढ कर वे थक जाएँ,
इतना उन्हें छकाऊँगी।"

''सतरंगी छतरी से अम्मा,
सातों दिन गिन पाऊँगी।
छुट्टी का दिन जब आएगा,
मुँह ढक कर सो आऊँगी।''

''पर सबसे ज़्यादा वह छतरी,
तब आएगी अपने काम।
जब पानी बरसेगा नभ से,
हमें करेगा वह हैरान।

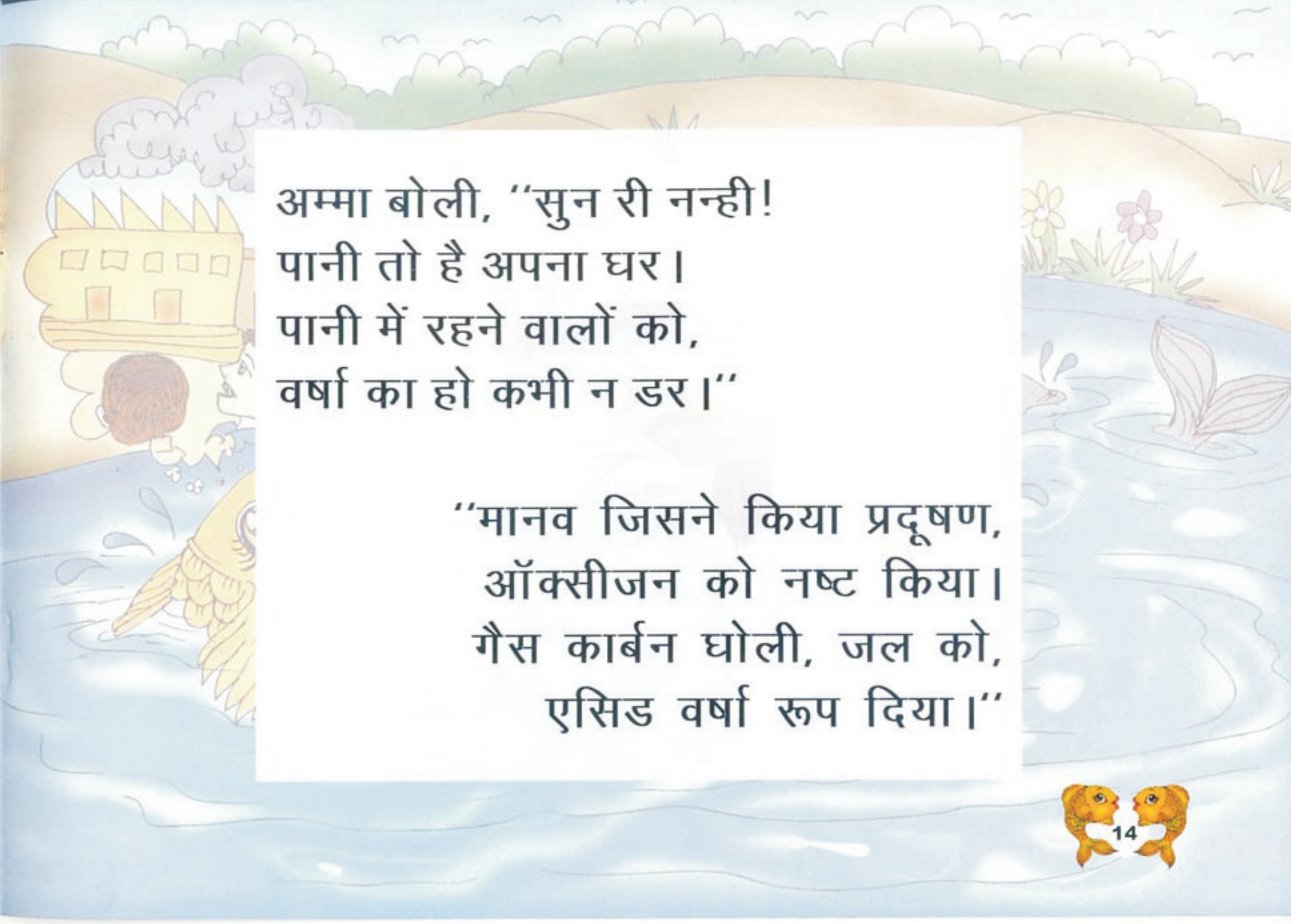

अम्मा बोली, "सुन री नन्ही!
पानी तो है अपना घर।
पानी में रहने वालों को,
वर्षा का हो कभी न डर।"

"मानव जिसने किया प्रदूषण,
ऑक्सीजन को नष्ट किया।
गैस कार्बन घोली, जल को,
एसिड वर्षा रूप दिया।"

''उस एसिड वर्षा से अम्मा,
छतरी हमें बचाएगी।
सीधी हम पर गिर कर हमको,
और नहीं तड़पाएगी।''

अम्मा बोली,''समझ गई मैं,
छतरी नई दिलाऊँगी।
इन्द्रधनुष के रंगों वाली,
छतरी झटपट लाऊँगी।''

बच्चों की सोच की न कोई सीमा है और न ही उनकी जिज्ञासाओं का कोई अंत है। उनकी तर्क की क्षमता विलक्षण है और उनमें कल्पना की उड़ान भरने की चाह भी अथाह है। "नन्ही मछली की सतरंगी छतरी" में समस्त बाल–सुलभ प्रवृत्तियों का समावेश है और साथ ही साथ इसकी विशेषता है इसकी मौलिकता। एक सतरंगी छतरी द्वारा नन्ही मछली न केवल अपनी बहुआयामी सोच का प्रदर्शन करती है बल्कि चरमोत्कर्ष के रूप में पर्यावरण संबंधी एक ज्वलन्त समस्या को उजागर भी करती है। बच्चों की बाल सुलभ उत्सुकता के चरम के रूप में पर्यावरण संबंधी आज की सामयिक समस्या का अत्यन्त अभिनव तरीके से रहस्योद्घाटन होता है। यह मौलिक रहस्योद्घाटन पुस्तक का सर्वोत्तम पक्ष है।

प्रेरणा स्रोत - श्राव्या को...

ISBN : 978-81-906764-4-1
मूल्य: 95 रु.

स्पर्श मणि
Sparshmani

104, पॉकेट–ए, माउन्ट कैलाश,
ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली–110065
फोन नं. 011–26223242, म.नं. 9958077550